सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

जनवरी-फरवरी, 2007

विश्वास का स्तर

'वर्ष में तीन बार तेरे सब पुरुष इस्राएल के परमेश्वर, प्रभु यहोवा को अपना मुंह दिखाएँ।' (निर्गमन ३४:२३)

परमेश्वर मनुष्य के तत्व जानते हुये, अपनी प्रजा को कुछ आदेश दे रहे है, ताकी उनमें कृतज्ञता बढ़े। हम में से कई, कृतज्ञता की कमी की वजह से कष्ट उठा रहें है। तुम्हारे विश्वास का माप ही तुम्हारे कृतज्ञता का माप है। परमेश्वर चाहते हैं कि हम अपने उद्धार का दिन याद रखें। याद रखें किस तरह वह अशिष तुम पर आयी। किस तरह उन्होंने तुम्हें पाप और इस दुनिया की प्रतियोगिता से छुटकारा दिलाया। और यह जाने कि जो वह अब देने जा रहें है वह अति उत्तम है। तुम यह पहचान कर, परमेश्वर का धन्यवाद न करो, तो तुम कुछ गॅवा रहें हो। कुछ सन्त, रात्रि में उठकर परमेश्वर का धन्यवाद किया करते थे। परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए, तुम्हें थोड़ा समय नीयत करना चाहिए।

यहूदियों से कहा गया है कि वे यरूशलेम जायें। और वर्ष में तीन बार प्रभु के मंदिर में उपस्थित हों। यातायात का के किसी साधन बिना, वह बहुत लम्बा सफर था। फिर भी, उन्हें जाना ही है। तुम क्या सोचते हो कि वे रास्ते में क्या करते होंगे? एक जाति और एक व्यक्ति के रूप, उन के लिए परमेश्वर ने क्या किया - इस के बारे में वे सोचते रहते। मगर उस मे स्थित 'मसीहा' को वह पहचान नहीं पाये। उनके आने की आशा ने उन्हें इन यात्राओं के दौरान जीवित रखा। कुछ समय, वे अपने सारे परिवार के साथ आते और मंदिर में बलि चढ़ाते। परमेश्वर चाहते थे कि वे अपना पहलौठा उन्हें दे दें। इन सब बातों में परमेश्वर का एक खास उद्देश्य था। और जो इन विषयों को हल्का माने थे, उन्होंने कई कठिनाईयां झेली थीं।

पृष्ठ २ पर..विश्वास का स्तर..

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ६:३० बजे

आदि में परमेश्वर ने...

पवित्र बाइबल का, इन्ही शब्दों से शुरुआत होता है। हाँ परमेश्वर का स्थान वहीं है। उन के लिए, और कोई स्थान नियत नही किया जा सकता, चाहे वह मनवीय घमंड से हो या अक्खड़पन से। हम बखूबी जानते है कि परमेश्वर को प्रथम स्थान देना हमें कितना नापसंद है। हमें ऐसा लगता है कि परमेश्वर को प्रधान और प्रमुख स्थान देने से, हम कुछ गॅवा रहे हैं। 'परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी।' (मत्ती ६:३३) मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जिन्होंने इस वचन पर (आधारित) संदेश दिये थे। मगर जब 'स्वयं' और शरीर को मिटाकर, निर्णय लेने की बारी आती है तो, परमेश्वर को प्रथम स्थान पर रखने के लिए वे संघर्ष में है। दूसरे शब्दों में ऐसी परिस्थियों में, परमेश्वर और उनके मानवीय तर्क में औचित्य और लाभदायक नहीं लगा होगा। और उन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार करने का निर्णय लिया। उन में से कुछ लोग अपने स्वार्थी चुनाव के कारण पाए, कुकर्म के फल से कभी उभर नहीं पाये।

ऐसी कोई स्थिति नही जहाँ, परमेश्वर का स्थान दूसरा हो। अधिकतर लोग, अपनी अपनी समझ के अनुसार, एक दैनिक दिन-चर्या का अवलंबन करते है। और एक ऐसी जीवन शैली को अपनाते है जहाँ परमेश्वर को पिछली सीट पर धकेल दिया जाता है। खरीदारी हो या आत्म परिरक्षण या सुरक्षा के उपाय हो - जब चुनने की बारी आती है तो आदमी के विचार, सामाजिक तौर-तरीके या स्वयं अपनी अभिरूचियाँ ही पूर्ण रूप से आधिपत्य पाते है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का प्रथम स्थान बिल्कुल नही है। और नाही परमेश्वर का वचन उनके 'मार्ग का मानचित्र' है। अब सालों बीतते जाते, और ऐसे लोग लड़खडाते, फिसलते और नीचे धँस जाते है। और खुद जिन्दगी भी उनको पीछे छोड़ जाती है। इस के विपरीत 'मसीह के लिए मूर्ख बनना', यह कितनी अद्भुत बात है। हम सिर्फ जीतते है। क्यों की उद्धारक को अपना न्याय पूर्ण स्थान दिया जाय तो, और कोई दूसरा अंतिम-परिणाम हो ही नही सकता।

आज, हमारे बीच आत्मायें जीतने वाले हज़ारों लोग, विश्वास, समर्पण में महान स्तर के आदमी और औरतें उत्पन्न होने चाहिए थे। मगर जॉर्ज मुल्लर की तरह गहरा और विश्वासी पुरुष, हम पैदा नही कर पा रहे है। और ना ही हड्सन टैलर की तरह परमेश्वर के वचन का सरल आज्ञापालन करने वाले। और सुन्दर सिंह की तरह परमेश्वर के साथ-साथ चलने वाले आदमी हम उत्पन्न करने में असफल है। हमें बहुत प्रकाश दिया गया है। हमारी सामूहिक सम्मेलन और सभायें, परमेश्वर के वचन के प्रचार से भरपूर है। मगर आज्ञापालन, नम्रता, कृतज्ञता - किस में हम फिसल रहें है?

जैसे ही हम स्तुति, स्तुति और स्तुति करें, शैतान हमेशा दूर भागता रहे। जब परमेश्वर हमारे आगे चलें, हर दीवार नीचे गिरे। हमारे उद्धारक, मसीह 'आदि' और सब में पहलौठा है। वह हमारे आगे चलेंगे। पिछले साल की असफलता या घमंड की उसी नीरसता को नया साल में फिर से ना सहें। परमेश्वर से एक नयी आशा, विश्वास और समर्पण की माँग करें। हमें सौंपी गयी जिम्मेवारी, चाहे कितनी भी छोटी हो, प्रार्थना करें कि हम उस में ईमानदार ठहरें।

- जोशुआ दानिय्येल

शाही पानी - रायल वॉटर

रसायन शास्त्र की एक कक्षा, एक बार यह सीख रही थी कि विभिन्न तरह के तेज़ाबों, अलग-अलग पदार्थो पर किस तरह प्रतिक्रिया करते हैं। उस कक्षा के प्रोफेसर ने उनको सोने का एक टुकड़ा दिया और उनसे कहा कि वे उसका विलयन करें और पिघलायें। उन्होंने अपने पास, सब से तेज़ तेजाब में उसे डाल कर रात भर छोड़ दिया। मगर वह नहीं घुला। तरह-तरह के तेजाबों के मिश्रण का प्रयोग किया गया। मगर सब व्यर्थ निकला।

अंत में, सब ने प्रोफेसर से कहा कि सोने का विलयन नही किया जा सकता, यही उनका मानना है। प्रोफेसर मुस्कराए और बोले, 'मैं जानता हूँ कि तुम लोग उस सोने को पिघला नही सकते', उन्होंने आगे कहा, 'तुम्हारे पास जितने भी तेजाब हैं इस पर क्रिया नही कर सकते, मगर इस से प्रयत्न करो', और एक खास अम्ल की बोतल दे दी। उन्होंने उस बोतल में से थोड़ा पदार्थ उस ट्यूब में डाल दिया जिस में वह सोने का टुकड़ा था। और वह सोना जो अब तक सब दूसरे

पृष्ठ २ पर..शाही पानी..

पृष्ठ १ से..विश्वास का स्तर...

आज हमारे लिए भी, परमेश्वर का यही आदेश है। परमेश्वर के बच्चे होने में, हमारी बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। मैं हमेशा परमेश्वर से पूछता हूँ कि क्या मैं इस के लिए योग्य हूँ? कितनी बार हम ऐसी सोच और इच्छा रखते है, जो परमेश्वर के विरुद्ध है! परमेश्वर के विचारों के स्तर पर हमारे विचार भी पहुँचे,यही एक मसीही की वृद्धि की विधि है। क्रमिक, तुम्हारे अपने विचार तुम्हें छोड़ जाएंगे और परमेश्वर के विचार तुम में स्थिर बनेंगे। इस विधर्मी स्थल में, एक मसीही होना, बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। हम अपनी अयोग्यता पहचान कर, परमेश्वर से माँग करे कि वे हमें योग्य बनाये। क्या तुम अपने कॉलेज में दिखा पाये कि तुम एक मसीही हो? जब तुम्हारे विचार मसीह के आधीन हो, तब वह बहुत बड़ी जीत है। परमेश्वर पर, अपनी आत्मा द्वारा बिना शंका करे विश्वास करो। कुछ समय तक आदमी, दर्शन, वाणी, चमत्कार - इन के आधार पर, परमेश्वर पर भरोसा करेगा। मगर एक ऐसे स्तर तक हमें पहुँचना है जब परमेश्वर का नग्र विश्वास से भरोसा करें। मैडम गय्यून कहा करती थीं कि दर्शन देखना, आत्मा के एक निचले स्तर का वरदान है। और जो उनको अपना आधार बनाते है, अन्त में कभी सिद्ध नही बन पाएंगे। परमेश्वर का वचन हम में कार्य करके, एक ऐसा विश्वास उत्पन्न करता है जो हमेशा हमें परमेश्वर से लिपटाये रहे। जैस-जैसे परमेश्वर का वचन तुम्हारे लिये मूल्यवान बने और उनके वचन का आज्ञापालन करता रहे तो शैतान काँपने लगेगा। अन्धकार की शाक्तियाँ डर जाएंगीं और सावधान रहने लगेंगी। जब तक तुम अपने जीवन को कामयाबी से भरा न पाओगे, तब तक तुम आगे और आगे बढ़ते जाओगे, । दस नहीं, हजारों मसीह के लिए जीते जाएंगे।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को वर्ष में तीन बार आने के लिए कहा। उसमें बहुत खर्चा भी होता था। बहुत समय लगता। परमेश्वर ने कहा, 'पहलौठा मेरा है।' यह सब परमेश्वर पर विश्वास को और अधिक दृढ़ करता। मगर भौतिक वस्तुओं का त्याग करना बहुत बड़ी बात नही। तुम्हारी आध्यात्मिक क्षमता बहुत विकसित हो सकती है। तुम्हारे विचार और तुम्हारे वचन नबूवती बन सकते है। जो लोग तुम्हारे सम्पर्क में आते, यह महसूस करे कि तुम एक विद्युत्मय तार हो। नबी वैसे ही थे। हम शनिवार को प्रार्थना के लिए क्यों इकट्ठा होते हैं? ताकी हमारा विश्वास बढ़े। जैसे समय बीतता जाएगा, तुम जरूर मसीह की महिमा करोगे और अत्मायें उनके पास लाओगे। तुम विश्वास में ऐसी ऊँचाई पर पहुंचोगे, जहाँ से तुम कभी ना गिरोगे।

तुम्हारा विश्वास एक सही दिशा में आगे बढता है। और इस तरह गहरा और चौड़ा बहता है कि समाज पर भी असर डलता है। जॉन वेस्ली के समूह में, वे प्रार्थना करते, प्रतीक्षा करते और आज्ञापालन करते। जब वे जगह-जगह जाते, हर स्थान पर आध्यात्मिक रूप से वे भरपूर असर कर देते। एक दिन, परमेश्वर हमें भी उसी तरह इस्तेमाल करेंगे। परमेश्वर के अराधनालय को, उनके नाम की महिमा के अनुरूप रखना, यह आसान बात नही। यह उद्धारक से सम्बन्धित है। 'कोई तेरी भूमि का लालच नहीं करेगा।' (वचन २४) यह एक महत्व पूर्ण वादा है। जितनी जल्दी तुम परमेश्वर के इच्छा में आते और तुम्हारी इच्छा नष्ट होती है, तुम उनकी आशिष की परिपूर्णता देख पाओगे। परमेश्वर और तुम दोनों आनंदित होगे। तुम्हारे उद्धार का आनन्द पूर्ण होगा। तुम स्वर्ग के प्रवाह में तैरोगे। वह चप्पू नही जो तुम्हें आगे ले जाता है, वह प्रवाह ही तुम को बहा ले जाता। जब तुम रडड्र को देखते हो, तुम्हें एहसास होता कि तुम महान कामयाबी और विजय की ओर प्रयाण कर रहें हो। आज हमारा लाभ से प्रेरित धर्म है। इसलिए विधर्मी हमारे धर्म का सम्मान नहीं करते। प्रभु हमारे साथ है। परमेश्वर कह रहे हैं, 'मैंने तुम्हें अपनी आज्ञा दी है' तुम अपने बच्चों को विधर्मियों से किसी भी तरह की वाचा नही करने देना। परमेश्वर की अनुमति हो तभी, नही तो किसी से भी कुछ वादा नही करना। अगर तुम वादा कर चुकें हो तो उसे तोड़ दो और परमेश्वर के पास जाकर पश्चात्ताप करो। मेरे मार्ग के नियंत्रण का अधिकार मेरा नही, मसीह का है।

मूसा, परमेश्वर के सन्निधि में गये, और उनका चमकता चेहरा वापस आया। वह तुम्हारी तरह एक साधारण मनुष्य थे। मगर वह कितने अलग थे। किसने उन्हें यह सम्मान दिया? परमेश्वर ने ! हमारा चाल-चलन और जीवन का हर पहलू, एक सीख हो। एक मसीही होना, बहुत बड़ा सौभाग्य है। ओह, व्यर्थ बिताए वे साल! हे मनुष्य, तुम्हें अब यह अवसर दिया गया है। अनुग्रह में बढ़ो। प्रभु में आनंदित हो। परमेश्वर कहते है, 'तुम मेरे जन हो। स्वर्गीय सत्य और अनन्त कालीन सत्य, मैं ने तुम पर प्रकट किया।' यह याद रखो कि जब तुम बाइबल पढ़ते हो तो अनन्त सत्य प्राप्त कर रहें हो। जिस पल तुम उस सत्य की धारा में प्रवेश करते हो, उसी क्षण से कोई तुम्हें हिला नही पायेगा। परमेश्वर तुम्हें प्यार और अनुग्रह की उस गहराई में ले जायेगें, जिसे संसार ने आज तक नही देखा।

- एन. दानिय्यल।

पृष्ठ १ शाही पानी...

तेज़ाबों का प्रतिरोध कर रहा था, झट से उस शाही पानी में घुल गया। अंत में सोने को उसका स्वामी मिल ही गया।

दूसरा दिन प्रोफेसर ने कक्षा से पूछा, 'तुम जानते हो क्यों इस तेज़ाब को 'शाही पानी' कहा जाता है?' 'हाँ', सब ने उत्तर दिया, 'क्योंकि यह सोने का स्वामी है; वह सोना-जो उस पर डाले गये तकरीबन सब पदार्थों का प्रतिरोध कर सकता है।'

तब उन्होंने आगे कहा, 'छात्रों, मैं एक और पदार्थ के बारे में बताने के लिए कुछ समय लूंगा, जो ठीक सोने की तरह अप्रभावनीय है। उसे छुआ नही जा सकता। उस पर सौइयों बार प्रयत्न करो तो भी बदला नही जा सकता। वह पदार्थ पाप से भरा हृदय है। परीक्षा, पीड़ा, धन-दौलत, सम्मान, खेद या दण्ड उसे नरम नही कर सकते या उस पर काबू नहीं पा सकते। विद्या और संस्कृति उसे घोल नहीं सकते या पवित्र नही कर सकते। सिर्फ एक मात्र द्रव्य, जो मानव हृदय में पाप के ऊपर प्रभावशाली है - वह आत्मा के उद्धार कर्ता, यीशु मसीह का लहू है।

- चुनीहुई

एक और साल का शुभारंभ

गीतकार फ्रान्सिस रिड़ले हॉवरगल, नयी साल के पहले दिन को बहुत गंभीरता से लेकर, खास उस दिन लिखा करती थी। इस अवसर पर वह हमेशा अपने अन्दर झाँक कर जाँच करने का समय मानती थी। नया दिन और नया साल, उनके प्रति अपनी मनोभाव व्यक्त करते कवितायें लिखती थी। बहुधा, नये साल के अवसर

पृष्ठ ३ एक और साल...

For More Details Please contact on any of the following Bookstalls

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

नये जीवन की आवश्यकताएँ

एक नन्हे शिशु का जन्म हुआ। एक नया प्राणी आया। तुम उसको सँभालते हो। तुम उसको नहलाते और कपड़े पहनाते हो। तुम उसका पोषण करते और गरम रखते हो। दिन-प्रतिदिन उसकी ज़रूरतों का ख्याल रखते हो। तुम जानते हो कि वह अपने आप खुद की देखभाल नही कर पायेगा।

परमेश्वर के राज्य में तुम जन्में हो। यीशु मसीह के लिए तुम ने अपने, हृदय को खोला है। उनको अपने हृदय के अन्दर आने का निमंत्रण दिया है। तुम ने उनको अपना उद्धारक मान लिया और अब तुम उन्ही के हो। और जब वह आये, उन्होंने तुम्हें अनन्त जीवन दिया। तुम्हारा अब ऐसा जीवन है जो इस से पहले कभी ऐसा न था: परमेश्वर-जिन्दगी, दिव्य-जिन्दगी। 'मैंने उन्हें अनन्त जीवन दिया'।

ठीक, अब, उस नये जीवन का, कैसे ख्याल रखोगे? तुम मसीह में एक नन्हे शिशु हो। अब, इस नये जीवन की क्या-क्या ज़रूरतें है? इस नये जीवन की ज़रूरतें, एक शिशु की ज़रूरतों की तरह ही हैं।

१. आहार:

एक शिशु को आहार खिलाना है और हर रोज खिलाना है। उसी तरह तुम को भी। परमेश्वर ने तुम्हें, जो नया जीवन दिया, उसे भी आहार की ज़रूरत है। एक शिशु का आहार दूध है। एक आध्यात्मिक शिशु का आहार - परमेश्वर का वचन रूपी दूध है। 'नवजात शिशुओं के समान शुद्ध आत्मिक दूध के लिए लालायित रहो, जिससे कि तुम उद्धार में बढ़ते जाओ' (१ पतरस २:२)

सन् १९०६, मे मैं ने अपना मन फिराया था। मैं ने परमेश्वर के वचन का अध्ययन उस दिन से लेकर आज तक, हर रोज किया है। साल के तीन सौ पैंसठ दिन वचन पढ़ा है। मुझे ऐसा एक भी दिन याद नही, जब मैं ने इस अति उत्तम पुस्तक की उपेक्षा की हो। इन बीते सालों में बाइबल ही मेरा आहार और पानी बन गया है। जितना ज्यादा मैं उसे पढ़ता हूँ उतना ज्यादा वह अनमोल बन जाता है। इस पुस्तक के समान और कोई पुस्तक नहीं। जब शैतान का हमला असाधारण रूप से तीव्र हो, तब परमेश्वर के वचन ही मेरी सान्त्वना और मेरा आधार है। समय दर समय, परमेश्वर का वचन, मेरे लिए क्रियाशील है। ऐसी कठिनाइयाँ आई जो मेरी सेवा का अंत करती। मगर परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाओं ने उन सब को विफल किया। जब दुख ने मेरी आत्मा को दबाया और विपत्ति ने मुझे घेर लिया, तब परमेश्वर ने अपने पवित्र वचन द्वारा मुझ से बात की। अपनी कड़वी निराशा के बीच, मैं ने उनकी आवाज सुनी: 'कदाचित् रात को रोना पड़े, परंतु प्रातःकाल आनन्द से भरा होता है।' (भजन संहिता ३०:५) और जब मेरा हृदय भय से भरा था, परमेश्वर को यह कहते मैं ने सुना, 'हे मेरे प्राण, तू निराश क्यों है? और भीतर ही भीतर तू व्याकुल क्यों? परमेश्वर पर आस लगाए रह - मैं रोज उसकी स्तुति करूँगा।' और उन्हें मैंने हमेशा सच पाया।

२. सहभागिता

एक शिशु को सहभागिता की ज़रूरत है। एक शिशु में अपने आप को और अपनी ज़रूरतों को व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए। जब वह भूखा हो या पीडा में हो, तब वह रोयेगा। तब माँ तुरन्त उसको सँभालती है। तुम्हें भी सहभागिता की आवश्यकता है। अगर तुम सही रूप से जन्में हो तो, तुम्हारे हृदय में एक पुकार होगी। उसे प्रार्थना पुकार कहते है। मेरी तुम से यह विनती है कि तुम अपने जीवन में हर एक दिन परमेश्वर से एकान्त में मिलो और प्रार्थना करों। उनसे सब कह डालो। कुछ ना छुपाओ। एक दोस्त से कैसे बात करते हो, उसी तरह उनसे भी बात करो। जब तुम बाइबल पढ़ते हो, तब परमेश्वर तुम से बात करेंगे। जब तुम प्रार्थना करो तो, तुम उनसे बात कर रहे हो। इस तरह दोनों के बीच सहभागिता होगी। जिस तरह एक दोस्त से पहचान बढ़ती है ठीक उसी तरह परमेश्वर से तुम्हारी पहचान बढ़ेगी। तुम उनसे और वह तुम से बातें करेंगे। जैसे दोनों बाते करते रहो, एक दूसरे को जान पाओगे। ओह, तब परमेश्वर से ज्यादा बातचीत करो। प्रार्थना करो ।

३. व्यायाम

उस नन्हे शिशु को व्यायाम की ज़रूरत है। वह उन छोटे-छोटे हाथों और पैरों को मारता रहता है ताकि उसकी कसरत हो जाए।

अगर तुम्हें मज़बूत बनना है तो तुम्हें भी कसरत की ज़रूरत है। और इसलिए तुम्हें मसीह का साक्षी बनना है क्योंकि तुम्हारे व्यायाम का वही तरीका है। दूसरों को बताओ। व्यक्तिगत काम करो। खुले आम मसीह को स्वीकार करो। गवाही दो। अगर तुम ऐसा नही करोगे तो, तुम विश्वासहीन बन जाओगे। अगर ऐसा करते हो तो मज़बूत बन जाओगे। व्यस्त बनो और मसीह के लिए कुछ करो। परमेश्वर ने जो कुछ भी तुम्हारे लिए किया - अगर तुम्हें उसकी कदर है तो तुम ज़रूर वैसा करोगे। तुम गवाही देने के लिए हिचकिचाओगे नही।

जैसे तुम अपने राजा और राज्य पर गर्व करते हो, कम से कम उतना तो अपने प्रभु और उद्धरकर्ता पर गर्व करो। युद्धभूमि पर तुम अपने रंग दिखाने में शर्मिन्दगी महसूस नहीं करोगे। वास्तव मे तुम अपना झंडा लहराने के लिए और उसके नीचे कवायद(मार्च) करने के लिए उत्सुक रहोगे। तब राजा यीशु के ध्वज को उठाने में क्यों संकोच कर रहे हो? क्यों कि इस तरह, यह संसार जान लेगा कि तुम किसके पक्ष में हो। उस महान दिन, क्या तुम चाहते हो कि प्रभु तुम्हें देखे और लज्जित हो? पिता और स्वर्गदूतों के सामने लज्जाएगा? तब, तुम अब उनकी वजह से लज्जित न होना। परमेश्वर कह रहें है, 'यदि अपने मुख से यीशु को अंगीकार करे तो उद्धार पाओगे' (रोमियो १०:९)

एक विश्वासी को बुलन्द बनाने में खुले आम अंगीकार करने से बढ़कर शायद ही और कुछ हो। अगर तुम आध्यात्मिक रूप से बढ़ना चाहते हो तो मसीह को खुले आम स्वीकार करो। चुप रहने वाले मसीहीयों की शैतान परवाह नही करता।

मगर जो खुल्लम खुल्ला, मसीह का समर्थन करते हैं, शैतान उनका डटकर विरोध करता है। फिर भी सिर्फ अंगीकार करने से ही उसके हमले निर्बल बन जाएंगे।

जिसे तुम प्यार करते हो, उसके बारे में तुम बोल सकते हो। ज्यादातर लोग, कम से कम, ऐसा कर सकते है। अगर तुम वास्तव में, प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करते हो तो तुम ज़रूर चाहोगे कि तुम उनके बारे में बातें करो।

मेरे प्रिय दोस्त, सच में, गवाही - इस सांसारिक मिलनसार के विरुद्ध अति उत्तम दवाई है। तुम अपने इन सांसारिक सहचरों को छोड़ने की ज़रूरत नही, कभी नही। सिर्फ तुम उन्हें यीशु मसीह के बारे में बताओ। जब तुम प्रार्थना करो तो उन्हें भी घुटनों के बल बैठने के लिए बोलो। उन्हें सुसमाचार का पर्चा दो और प्रचार सभा में आने का निमंत्रण दो। यह प्रयत्न करके देखो। जलते कोयले की तरह वे तुम्हें छोड़ देंगे। तुम्हारी ज़रूरत अब नही होगी। तब तुम्हें नये दोस्त और सहचर मिल जाएंगे। मसीही, उन सब से प्यार करते हैं, जिससे तुम प्यार करते हो और उन्हें चाहते हैं, जिन्हें तुम चाहते हो। और उनकी दोस्ती अनन्तकाल तक तुम्हारी होगी। और ऐसा नाता जो मृत्यु भी तोड़ नहीं पायेगी।

ओह, तब, हम परमेश्वर से सच्चे रहें। मसीह के बारे में गवाही दें। लोगों के सामने उन्हें खुल्लमखुला अंगीकार करें। और तब प्रभु का आनन्द और प्रशंसा तुम्हारा प्रतिफल होगा।

- चुनीहुई

मृत्युंजय खिस्त

पृष्ठ २ एक और साल...

पर इन्हीं कविताओं को वह अपने दोस्तों को भेजा करती थीं। सन् १८७४ में उनकी लिखी एक कविता अमर बन गयी। तब वह छत्तीस साल की थी। इस तरह अपनी भावनाओं से निकली उस कविता को उन्होंने लिखकर, अपने दोस्तों को भेजने के लिए एक खास डिजाइन वाली ग्रीटिंग कॉर्ड पर छपवाया। उस कॉर्ड का शीर्षक इस तरह था:

'नये वर्ष की शुभकामनायें! साल भर रहे हर दिन खुशहाल!'। और अन्दर लिखा हुआ था:

एक और साल का शुभारंभ:
कर रहें हो प्रतीक्षा या करम,
साथ रहें हमेशा, प्रिया पिता परम;
एक और साल, करते स्तुति,
एक और साल, करे उन्नति;
एक और साल, करने सिद्ध,
कि होगा हर हाल, आपका सान्निध्य।

सत्य की परख!

'यहोवा का धन्यवाद करो, क्यों कि वह भला है; और उसकी करुणा सदा की है।'
भजन संहिता (१०७:१)

उकाब के पंख

यशायाह ४० में जैसा कहा गया है कि जो यहोवा की बाट जोहते है, वे उक़ाबों के समान पंख फैलाकर ऊंचाई पर उड़ेंगे। उक़ाब महाश्येन पक्षी है। उक़ाबों की नज़र बहुत पैनी है। वैज्ञानिकों का मानना है कि उनकी दृष्टि मनुष्यों से करीब आठ गुना ज्यादा तीक्ष्ण है। उनके पाद शक्तिशाली है । उनके पंजों की पकड़ एक शिकंजे की तरह है। उनकी चोंच कसाई की तरह, अपने आहार को काटने, दबोचने और चीरने के लिए ढाले गये है।

मगर इससे बढ़कर, उक़ाबों की बनावट उड़ान भरने के लिए है। उनकी रफ्तार अविश्वसनीय है। उनमें साठ, अस्सी और सौ मील प्रति घंटा उड़ने की क्षमता है। वे एक हवाई जहाज की तरह लहरों में उठते गिरते और चक्कर मारते करतब कर सकते है। उनका पंख-विस्तार, करीब आठ फ़ीट तक होगा।

मगर उक़ाब, गोरैया या रॉबिन (गायक पक्षी) की तरह नही उड़ते। अधिकतर पक्षी अपने पंख फड़फड़ाकर हवा में उड़ते हैं। मगर उकाब अधिक समय अपने पंख नही फड़फड़ा सकते। उनका निर्माण परबाजी के लिए अनुकूल है। और थोड़ी सी शक्ति से ही वे बहुत ऊँची उड़ान भर सकते है।

परमेश्वर ने हमारे ग्रह की सृष्टि इस तरह की कि पृथ्वी की सतह से इधर-उधर गरम हवा के उष्मीय खम्भे ऊपर उठते रहते है। ये तापीय हवा के कालम अदृश्य है। उकाबे इन तापीय खम्भों को ढूढ़ते है और उस अदृश्य प्रवाह मे जूझकर अपने पंख फैलाते है। आकाश में ऊपर और ऊपर उठते जाते है, मानो एक लिफ्ट में आरोहण कर रहें हो।

चौदह हजार फ़ीट, इतनी ऊंचाई तक उड़ सकते है। आकाश में इतनी ऊपर कि पृथ्वी से उन्हें साधारण आखों से देखा नही जा सकता।

जब वे इतनी ऊंचाई पर पहुँचते है, अपने पंख फैलाए हुए उस प्रवाह से बाहर निकल आते है। और इस तरफ -उस तरफ, ऊपर-नीचे पखबाजी करते हुए बड़ी कम मेहनत से ही मीलों सफर करते है।

ऐसा लगता है कि यशायाह हमें कह रहें है कि परमेश्वर अदृश्य है। मगर इस ग्रह के उन अदृश्य ऊपर उठाती ऊष्मीय खम्भों की तरह, वह अपनी लोगों के लिए मौजूद है। जब हम उन्हें ढूंढ़ते है, उनके वादों का दावा करते है, और विश्वास के पंख फैलाए उन पर भरोसा करते है तो एक उच्च स्तर पर उठाये जाते है। हम दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, हम चलेंगे पर थकेंगे नहीं।

परमेश्वर पर भरोसा रखकर, यीशु मसीह में शांत रहने से, एक पवित्र, विजयी और प्रभावशाली जीवन जीने की शक्ति मिलती है। - कठिनाई में पड़ी गौरैया की तरह पंख फड़फड़ाने से नहीं।

- चुनीहुई।

बीविंगटन और गिलहरियाँ

ओहियो में, मैं एक और सभा में सेवा कर रहा था। मुझे एक और जगह जाने का निमंत्रण मिला। उस सभा के बाद, मैं इस बुलावा के बारे मे निर्धारित करने के लिए जंगल में प्रार्थना करने के लिए गया। एक खोखले पेड़ के तने के अंदर रेंगता गया। बर्फ गिरने के कारण काफी ठंड लग रही थी। परमेश्वर ने वहाँ जाने के लिए कहा, इसलिए मैं चला गया।

तीन रात मैं ने प्रचार किया था। तब मुझे एक सूचना मिली कि मैं और आगे उस स्कूल हाउस में प्रचार नही कर सकता। यह स्पष्ट जानते हुए कि परमेश्वर ने मुझे दुबारा आने के लिए कहा है, मैं जंगल में वापस गया। एक दूसरे खोखले लट्ठे में घुस गया। वहाँ मैं पाँच दिन रहा। तब एक विचित्र परिस्थिति आई। मुझे भूख लगने लगी। इसका हमेशा से यह मतलब रहा है कि अब उपवास का अंत है; मगर मैं जानता था कि जिस बात के लिए मैं प्रार्थना कर रहा था उसमें मुझे विजय नही मिली थी। इसलिए मैंने तब तक वहाँ रहने का निर्णय लिया जब तक या तो स्वर्ग से कुछ सुनु नहीं तो उधर ही मर जाऊँ। मेरी भूख बढ़ने लगी और मैं कमजोर महसूस करने लगा। दोनों ही अच्छे प्रमाण थे कि या तो मेरे उपवास का अंत हुआ या मैं सफल रहा। मैं इस की चर्चा इसलिए कर रहा हूँ कि रोजमर्रा के कामों में व्यस्त रह कर आध्यात्मिक या मौलिक कामों का ह्रास करने से आनेवाले खतरे दिखाना चाहता हूँ। और परमेश्वर कुछ अलग ही तरह से काम करते है।

वह लट्ठा कुछ छोटा ही था। जरा सी अंगड़ाई लेने के लिए जहाँ तक हो सके, मैं अपने हाथों को आगे बढ़ाता। मैं प्रभु से कहता रहा कि मैं भूखा हूँ और अब तक संतुष्ट भी नही हूँ। भूखा ही, मैं दूसरे दिन भी प्रार्थना कर रहा था। जैसे मैने अँगड़ाई ली, कुछ अजीब सी चीज मेरे हाथ पर लगी। टटोलने पर वैसे ही और भी मिले, और मैंने उन सब को बटोरा। यह तैय किया कि वे बंजुफल (एकार्न) थे और उन्हें खाकर मुझे अच्छा लगा। वैसे तो मैं बाँजफलों का कभी शौकीन नही था; मगर वे कितने स्वादिष्ट थे। मगर मैंने कहा, ये बाँजफल इधर कैसे आये? क्योंकि वे ताज़ा भी लग रहे थे। उतनी दूर अँगड़ाई में पहले भी लेता रहा, मगर इस से पहले तो कुछ मेरे हाथ नही लगा। तो वे इधर कैसे आये? और कितनी देर से उधर पडे थे? ऐसे प्रश्न उठे और किसी भी तरह इसका जवाब खोजना चाहता था।

मैंने वे छः बुजफल खा लिये और तरोतजा महसूस किया। तब शाम के छः बजे थे। रात भर मैं वहीं पर रहा। अगले दिन सुबह अँगड़ाई लेते समय छः और बुजफल मिल गये। मैंने चारो तरफ टटोलकर देखा, फिर भी छः ही मिले। अब इस तरह, उस खोखले लट्ठे में तीनों वक्त, ऐसे ही चार दिन तक, मुझे छः ताजा बुजफल मिलते रहे। उस लट्ठे में कुल मिलाकर दस दिन तक मैं इसी तरह सफल होने तक प्रार्थना करता रहा।

मगर मेरे लिए यह बहुत उत्सुकता की बात बन गयी कि किस तरह वह छः बुजफल उधर पहुँच रहे थे? इसलिए अन्तिम दिन मैं लट्ठे से बाहर निकल आया। यह बहाना करके कि मैं अन्दर ही हूँ, जूतों को लट्ठे के द्वार पर ही छोड़ा दिया। वहाँ से कुछ दूर एक खोखले पेड़ में जा छिपा। सुबह ११:४५ पर छः बड़े भूरे रंग की गिलहरियाँ आयी। एक एक कर के, उस लट्ठे के ऊपर कूदीं और गाँठ के छेद से अपना-अपना बुजफल अन्दर छोड़ दिया।

मैंने कहा, 'अदभुत; मेरा परमेश्वर, इधर इन छः गिलहरियों के जरिये मुझे खिलाते रहा है', मैं खुशी के मारे रो पड़ा यह सोचते कि उन्हें मेरी ज़रूरतों का इतना ध्यान था। और इन मूक जानवरों से अपना आज्ञापालन करवाया। मैं ने कहा, एलिय्याह ही एक मात्र नही, जिनको जानवरों के जरिये खिलाया गया हो।'

मैं दुबारा लट्ठे के अंदर घुस गया, ओह कितना नम्र, हमेशा से मेरी यह इच्छा रही कि ऐसे नम्र महसूस करते जीयूं ,जैसे इन लम्हो में मैं महसूस कर रहा था।

बाद में, किसी व्यक्ति को, किसी तरह यह पता चला कि मैं उस लट्ठे में था और मेरा दावा था कि गिलहरियों ने मुझे भोजन खिलाया; जिधर मैं ठहरा था, उस किराए के मकान पर मैं वापस लौट रहा था। तब वह मुझे आकर मिला और कहा, 'श्रीमान बीविंगटन, मुझे यह पता चला था कि आप पहाड पर एक खोखले लट्ठे में थे और आप का दावा है कि गिलहरियों ने आपको बुजफल खिलाये ... क्या आप जानते हो कि आप एक चोर हो?'

'नहीं, सर। मैं नहीं जानता।'

'हाँ, सर, आप एक चोर हो। और मैं यह सिद्ध कर सकता हूँ। वह गिलहरियाँ अपने शीतकाल के लिए आहार इकट्ठा कर रहीं थी। आप ने सब कुछ खा लिया!'

यह सुनकर मैं लड़खड़ाया। मैं ने कहा, 'क्या ये संभव है?'

अगले दिन, सही तरह से समझने के लिए, मैं वहाँ शाम चार बजे ऊपर पहुँच गया। मैंनें लट्ठे के अंदर घुस कर देखा। एक भी बुजफल नही पाया। तीन दिन मैं ऐसा ही करता रहा। मगर बुजफल नही थे। इस तरह उस प्रश्न का उत्तर मिल गया। यह साफ और स्पष्ट था कि परमेश्वर ने उस खास अवसर के लिए गिलहरियों को भोजन-प्रबन्धक बनाया। मुझे लगा कि मैं यीशु मसीह के चरणों पर सिर्फ नम्र पडा रहूँ। उन्हें एक अवसर दूं, यह मानते हुए कि वही सारे बातें संभालेंगे। क्यों कि क्या उत्तम है, वही जानते है।

- (चुनीहुई) बीविंगटन का अनुभव।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।